

## यशुमति कान्हहि यह समुझावति

यशुमति कान्हहि यह समुझावति:

यशुमति कान्हहि यह समुझावति,  
सुनहु श्याम सब पढ़त लिखत हैं,  
इक तुम्हहि बस धेनु चरावत,  
यशुमति कान्हहि यह समुझावति-----

ब्रज लरिकन नीक दुलहिन लयिहैं,  
बात तोहें काहे समझु न आवति,  
यशुमति कान्हहि यह समुझावति-----

ब्रज गोपिन सब दोष मढ़त हैं,  
तू फोड़त मटकी चोर कहावत,  
यशुमति कान्हहि यह समुझावति-----

हँसत हरी सुनि मईया बतियन,  
चढ़त गोद मुख अंचरि लुकावति,  
यशुमति कान्हहि यह समुझावति---।।

रचना आभार: ज्योति नारायण पाठक  
वाराणसी

<https://alltvads.com/bhajan/lyrics/id/8613/title/yashumati-kanhahi-yah-samujhawati>

अपने Android मोबाइल पर [BhajanGanga](#) App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |